कॉलरिज का कल्पना सिद्धांत

कॉलरिज की स्थापनाओं में कल्पना विषयक स्थापनाओं का विशेष महत्त्व है। कॉलरिज से पूर्व कल्पना के विषय में अनेक तरह की असंगत धारणाएँ प्रचलित थीं। इनमें एक प्रमुख धारणा यह थी कि कल्पना प्रकृति का वरदान है या कल्पना एक दिव्य रहस्यमयी शक्ति है, इसलिए इसकी व्याख्या तर्क के आधार पर नहीं की जा सकती। यानी, यह दिव्य, अलौकिक एवं तर्कातीत शक्ति है। एक 'दिव्य दृष्टि' के रूप में यह कवियों को जन्मजात प्राप्त होती है।

कॉलरिज ने कल्पना पर तर्कसंगत ढंग से विचार किया और कहा यह बेशक दिव्य शक्ति हो सकती है, किंतु रहस्यमय नहीं है। इसकी व्याख्या की जा सकती है। और उन्होंने व्यवस्थित ढंग से कल्पना की व्याख्या की भी।

कॉलरिज ने कल्पना के दो भेद माने हैं—1. मुख्य या प्रारम्भिक (Primary) और 2. गौण या विशिष्ट (Secondary)।

मुख्य या प्रारम्भिक कल्पना आद्य कल्पना है। इसे उन्होंने 'इन्द्रियगोचर पदार्थों की प्रतीतानुभूति की क्षमता' (Power of perceiving the objects of senser) कहा है। उनकी दृष्टि में इन्द्रियों द्वारा जिन विभिन्न वस्तुओं का बोध होता है, यह कल्पना ही उन्हें व्यवस्था में ढालती है। अव्यवस्थित बिखरे हुए बिम्बों को धीरे-धीरे ज्ञान का रूप प्रदान करती है। यह एक जीवित एवं महत्त्वपूर्ण शक्ति है, जिससे हमें मानवीय पदार्थों का बोध होता है। यह वास्तव में एक सहज एवं स्वाभाविक मानवीय गुण है।

विशिष्ट या गौण (Secondary) कल्पना विशिष्ट लोगों में पाई जाती है। यह एक आत्मिक उर्जा है जिसमें मनःशक्ति अथवा आत्मशक्ति के अन्य सभी पहलू प्रत्यक्ष ज्ञान शक्ति (Power of Perception), विचार शक्ति (Intellect), संकल्पशक्ति (will power), मनोवेग (Emotion) आदि सभी समाहित हो जाते हें।

पुनः देखें, कॉलरिज के अनुसार, "मेरे विचार से कल्पना या तो मुख्य होती है या गौण। मुख्य कल्पना एक जीवंत शक्ति है और यह मानव के सम्पूर्ण इन्द्रिय ज्ञान का प्रमुख साधन है। यह सीमित मन की असीमसत्ता की आवृत्ति है। गौण कल्पना को मैं इसी मुख्य कल्पना की प्रतिध्वनि मानता हूँ। इसका अस्तित्व सचतेन इच्छा-शक्ति के साथ है। इन दोनों में भेद मात्रा और कार्य-पद्धति का है, साधन के प्रकार का नहीं। यह पुनः सृजन के उद्देश्य से (मुख्य कल्पना की दुनिया का) विलयन करती रहती है, उसे गलाती-पिघलाती रहती है अथवा जहाँ यह प्रक्रिया सम्भव नहीं हो पाती वहाँ भी हर हालत में यह आदर्शीकरण और एकीकरण के लिए संघर्ष करती है। यह अनिवार्य रूप से जीवंत होती है जबकि सभी वस्तुएँ (वस्तु रूप में) अनिवार्यतः स्थिर और निर्जीव होती हैं।

इसके विपरीत, ललित कल्पना के, स्थिरता और सुनिश्चितता के अतिरिक्त, अन्य कोई साधन नहीं होते जिनको लेकर वह व्यस्त रहे। ललित कल्पना मुख्यतः देश-काल के बन्धन से मुक्त स्मृति का ही एक प्रकार है। यह चयन की अनुभव मूलक क्रिया से मिश्रित और संशोधित होती है। किंतु सामान्य स्मृति के साथ ही यह सम्पूर्ण सामग्री, जो पहले से ही बनी-बनाई होती है, बराबर साहचर्य-नियम के द्वारा ग्रहण करती है।"

कल्पना की यह विस्तृत व्याख्या है, जो काव्य की रचना प्रक्रिया में बहुत सहायक है। इस आधार पर वे मुख्य या प्रारम्भिक कल्पना को हमारे सम्पूर्ण इंद्रिय ज्ञान का आधार मानते हैं। यह जीवंत और कहें कि 'सक्रिय' (Active) होती है। इसके विपरीत गौण कल्पना को वे 'मुख्य कल्पना की प्रतिध्वनि' मानते हैं। यों दोनों में, उनके अनुसार कोई गुणात्मक अंतर नहीं है किंतु यह अंतर 'मात्रा और कार्यपद्धति' का है।

कॉलरिज ने बार-बार कल्पना के महत्त्व को रेखांकित किया है। वे कहते हैं, "कल्पना के द्वारा ही काव्य हृदयग्राही, मर्मस्पर्शी और सजीव बनता है, अतः कल्पना की क्षमता और महत्त्व अक्षुण्ण है। कल्पना प्रयोग की अंतः शक्ति कवि का सर्वश्रेष्ठ गुण है और उसका समुचित प्रयोग काव्योत्कर्ष के क्षणों की समुचित देन है।" (The imagination is a power which the artist can only use where he is at his best)

कवि या साहित्यकार के पास कल्पना ही एक ऐसी शक्ति है, जिसके आधार पर वह सर्वजन मनोहारिणी रचनाएँ प्रस्तुत करता है। बल्कि यह भी कहा जा सकता है कि कल्पना जगत् ही कवि की 'वास्तविक' दुनिया है। वह कल्पना का स्वयं भी आनंद लेता है तथा दूसरों को भी इस आनंद-सागर में डुबकियाँ लगवाता है।

कल्पना में गौण (या विधायक कल्पना कह लें) कल्पना का भी महत्त्व कॉलरिज ने विस्तारपूर्वक रेखांकित किया है। इसे 'मुख्य कल्पना की प्रतिध्वनि' तो माना ही है, साथ ही इसकी कार्य पद्धति को व्याख्यायित किया है। काव्य-सर्जना के क्षणों में यह किस प्रकार क्रियाशील रहती है, इसकी ओर संकेत किया है। वस्तुतः उनकी दृष्टि में यह गौण (विधायक) कल्पना पुनः सृजन के उद्देश्य से सम्पूर्ण काव्य-सामग्री का विलयन करती रहती है। उसे पिघलाती और गलाती रहती है। उस तरह यह नाश और निर्माण दोनों करती रहती है।

विधायक कल्पना में सर्जना की यही अद्भुत शक्ति होती है। इस शक्ति के बल पर ही रचना में 'विरुद्धों के सामंजस्य' की स्थिति बनती है। इसे ही 'कल्पना की संश्लेषणात्मक और जादुई शक्ति' कहा गया है। इस संदर्भ में कॉलरिज का कथन है—"यह शक्ति विसंवादी अथवा परस्पर विरोधी तत्त्वों के सामंजस्य में व्यक्त होती है: जैसे साम्य का वैषम्य के साथ, सामान्य का विशेष के साथ, प्रत्यय का बिम्ब के साथ, वैयक्तिक का प्रतिनिधिक के साथ, नवीनता और ताज़गी की चेतना का पुराने-परिचित पदार्थों के साथ, भावावेश का सामान्य से अधिक संयम के साथ, चिर जाग्रत विवेक ओर मनस्विता का उत्कट उमंग और गहन भावनुभूति के साथ। यह प्राकृतिक और कृत्रिम तत्त्वों के बीच समन्वय और सामंजस्य स्थापित करते समय कला को प्रकृति के, रूप को वस्तु के और कवि के प्रति हमारे आदर-भाव को, काव्य के प्रति हमारी सहानुभूति के अधीन रखती है।"

इस तरह कल्पना काव्य की रचना-प्रक्रिया का महत्वपूर्ण तत्त्व है। वही सामान्य को विशेष बनाती है।

कॉलरिज का काव्य चिंतन निश्चय ही पाश्चात्य काव्यशास्त्र को एक नई दिशा देने वाला है। उन्होंने अपने कल्पना विषयक सिद्धांत को अपने समय की रचनाशीलता के संदर्भ में प्रामाणिकता के साथ व्याख्यायित किया और भविष्य के महत्त्वपूर्ण काव्य शास्त्रीय चिंतन की आधारशिला रखी।